इस्लाम क्या है? (4 का भाग 1): इस्लाम का मूल

रेटिंग: **5.0**

विवरण:

श्रेणी: [लेख](#) [इस्लाम की मान्यताएं](#) [इस्लाम क्या है](#)

द्वारा: M. Abdulsalam (© 2006 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 26 Mar 2023

ईश्वर ने मानवता को जो आशीषें और उपकार दिए हैं, उनमें से एक यह है कि ईश्वर ने उन्हें अपने अस्तित्व को पहचानने और स्वीकार करने की एक सहज क्षमता प्रदान की है। उन्होंने इस जागरूकता को उनके दिलों में एक प्राकृतिक स्वभाव के रूप में गहराई से रखा, जो तब से नहीं बदला है जब से मनुष्य को पहली बार बनाया गया था। इसके अलावा, ईश्वर ने इस प्राकृतिक स्वभाव को उन चिन्हों के साथ सुदृढ़ किया जो उसने सृष्टि में रखे थे जो उसके अस्तित्व की गवाही देते हैं। हालाँकि, चूंकि मनुष्य के लिए स्वयं से रहस्योद्घाटन के अलावा ईश्वर का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है, इसलिए ईश्वर ने अपने दूतों को लोगों को उनके निर्माता के बारे में बताने के लिए भेजा, जिनकी उन्हें पूजा करनी चाहिए। ये संदेशवाहक अपने साथ ईश्वर की पूजा करने का विवरण भी लाए थे, क्योंकि इस तरह के विवरण को रहस्योद्घाटन के अलावा नहीं जाना जा सकता है। ये दो बुनियादी बातें सबसे महत्वपूर्ण चीजें थीं जो सभी दिव्य रहस्योद्घाटन के दूत अपने साथ ईश्वर से लाए थे। इस आधार पर, सभी दिव्य रहस्योद्घाटन के एक ही उच्च उद्देश्य था, जो हैं:

1. प्रशंसित और गौरवशाली निर्माता यानि ईश्वर की उनके सार और उनके गुणों में एक होने की पुष्टि करना।

2. यह पुष्टि करना कि केवल ईश्वर की पूजा की जानी चाहिए और उनके साथ या उनके बजाय किसी अन्य की पूजा नहीं की जानी चाहिए।

3. मानव कल्याण की रक्षा करना और भ्रष्टाचार और बुराई का विरोध करना। इस प्रकार आस्था, जीवन, कारण, धन और वंश की रक्षा करने वाली हर चीज इस मानव कल्याण का हिस्सा है, जिसकी धर्म रक्षा करता है। दूसरी ओर, जो कुछ भी इन पांच सार्वभौमिक आवश्यकताओं को खतरे में डालता है वह भ्रष्टाचार का एक रूप है जिसका इस्लाम धर्म विरोध करता है और प्रतिबंधित करता है।

4. लोगों को उच्चतम स्तर के सद्गुण, नैतिक मूल्यों और महान रीति-रिवाजों के लिए आमंत्रित करना।

हर ईश्वरीय संदेश का अंतिम लक्ष्य हमेशा एक ही रहा है: लोगों को ईश्वर की ओर निर्देशित करना, उन्हें उनके बारे में जागरूक करना, और उन्हें केवल ईश्वर की पूजा करने को कहना। प्रत्येक ईश्वरीय संदेश इस अर्थ को मजबूत करने के लिए आया था, और निम्नलिखित शब्दों को सभी दूतों की बोलने पर दोहराया गया था: "ईश्वर की पूजा करो, ईश्वर के अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।" यह संदेश मानवता को पैगंबरों और दूतों द्वारा पहुँचाया गया था, जिसे ईश्वर ने हर राष्ट्र में भेजा था। ये सभी दूत इसी संदेश के साथ आए, जो इस्लाम का संदेश है।

सभी ईश्वरीय संदेश लोगों के जीवन को ईश्वर के प्रति स्वेच्छा से समर्पण करने के लिए आए। इस कारण से, वे सभी "इस्लाम", या "समर्पण" का नाम अरबी के शब्द "सलाम", या "शांति" से आये हैं। सभी पैगंबरो का धर्म इस्लाम था, लेकिन अगर वे सभी एक ही स्रोत से निकले हैं तो ईश्वर के धर्म के विभिन्न रूपों को क्यों देखा जाता है? इसके 2 उत्तर है।

पहला कारण यह है कि समय बीतने के परिणामस्वरूप, और इस तथ्य के कारण कि पिछले धर्म ईश्वर की दैवीय सुरक्षा के अधीन नहीं थे, उनमें बहुत परिवर्तन और भिन्नता आई। नतीजतन, हम देखते हैं कि सभी दूतों द्वारा लाए गए मौलिक सत्य अब एक धर्म से दूसरे धर्म में भिन्न हैं, सबसे स्पष्ट ईश्वर और ईश्वर की आस्था और पूजा का सख्त सिद्धांत है।

इस भिन्नता का दूसरा कारण यह है कि ईश्वर ने अपनी अनंत बुद्धि और शाश्वत इच्छा में, मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) द्वारा लाए गए इस्लाम के अंतिम संदेश विशिष्ट समय सीमा से पहले के सभी दिव्य लक्ष्यों को सीमित कर दिया। । नतीजतन, उनके कानून और कार्यप्रणाली उन लोगों की विशिष्ट स्थितियों से निपटते थे जिन्हें उन्हें संबोधित करने के लिए भेजा गया था।

मानवता सबसे आदिम युग से सभ्यता की ऊंचाइयों तक मार्गदर्शन, पथभ्रष्टता, अखंडता और विचलन के कई दौर से गुजरी है। ईश्वरीय मार्गदर्शन ने इस सब के माध्यम से मानवता का साथ दिया, हमेशा उचित समाधान और उपचार प्रदान किया।

यह विभिन्न धर्मों के बीच मौजूद असमानता का सार था। यह असहमति कभी भी ईश्वरीय कानून के विवरण से आगे नहीं बढ़ी। कानून की प्रत्येक अभिव्यक्ति ने लोगों की विशेष समस्याओं को संबोधित किया, जिसके लिए यह बनाया गया था। हालाँकि, समझौते के क्षेत्र महत्वपूर्ण और कई थे, जैसे कि विश्वास के मूल सिद्धांत; ईश्वरीय कानून के मूल सिद्धांत और उद्देश्य, जैसे आस्था, जीवन, कारण, धन और वंश की रक्षा करना और भूमिका न्याय करना और कुछ सबसे महत्वपूर्ण मूलभूत निषेध हैं जैसे:- मूर्तिपूजा, व्यभिचार, हत्या, चोरी, और झूठी गवाही देना। इसके अलावा, वे ईमानदारी, न्याय, दान, दया, शुद्धता, धार्मिकता और दया जैसे नैतिक गुणों पर भी सहमत हुए। ये सिद्धांत और साथ ही अन्य स्थायी और टिकाऊ हैं, वे सभी ईश्वरीय संदेशों का सार हैं और उन सभी को एक साथ बांधते हैं।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/6

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।